आभार

प्रस्तुत शोध-प्रबंध को पूरा करने में मेरे शोध निर्देशक डॉ. यू. एन. सिंह जी एवं सह शोध निर्देशक प्रो. आर. के. राऊत जी के प्रति मैं हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ। जिनके कुशल मार्ग - दर्शन के बिना इस कार्य को पूरा करना संभव ही नहीं था। उक्त द्वय विद्वानों से मिले कुशल निर्देशन, सहयोग तथा पुत्रवत स्नेह के प्रति मैं आजीवन ऋणी रहूँगा।

माननीय प्रो. आर. के. सिंह जी पूर्व कुलपति गुरू घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़ ने विश्वविद्यालय में शोध एवं अनुसंधान कार्य को हमेशा प्रोत्साहन दिया था। विश्वविद्यालय में जो शैक्षणिक वातावरण का निर्माण उन्होंने किया था उसी की वजह से मुझे शोध कार्य की प्रेरणा मिली थी।

आज गुरू घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़ में जो उत्कृष्ट शैक्षणिक एवं प्रशासनिक चुस्ती विद्यमान है वह वर्तमान कुलपति माननीय प्रो. गिरिजेश पंत जी एवं कुलसचिव माननीय डॉ. एस. के. राजू जी, आई. ए. एस. की प्रशासनिक दक्षता से ही संभव हो सका है। प्रो. पंत जी एवं डॉ. राजू जी विश्वविद्यालय में शोध कार्य को बढ़ावा देने हेतु सतत् प्रत्यनशील रहते हैं।

इस शोध प्रबंध को पूरा करने के लिए देश के कई विश्वविद्यालयों के पुस्तकालयों से प्राप्त पुस्तकों एवं पत्र-पत्रिकाओं के अध्ययन के बिना संभव नहीं था। खासकर नागपुर विश्वविद्यालय, गुरू नानक देव विश्वविद्यालय अमृतसर, संबलपुर विश्वविद्यालय, रविशंकर विश्वविद्यालय रायपुर, गुरू घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (शोधकेन्द्र) के पुस्तकालयों से प्राप्त पुस्तकों के अध्ययन से इस शोध प्रबंध को पूरा करने में बहुत अधिक मदद मिली है। उपरोक्त विश्वविद्यालयों के पुस्तकालयों में पदस्थ सम्मानीय अधिकारियों एवं कर्मचारियों के सहयोग के बिना इस प्रबंध को पूरा करना कठिन होता। उनसे मिले सहयोग के लिए मैं हृदय से उनके प्रति आभारी हूँ।

शासकीय महाविद्यालय भटगाँव के प्रभारी प्राचार्य प्रोफेसर एन. पी. द्विवेदी जी, श्री एस. के. शुक्ला एवं डॉ. बी. के. प्रसाद सहा. प्राध्या. शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय बिलासपुर के स्नेहिल सहयोग के बिना इस शोध प्रबंध को पूरा करना मेरे लिए असंभव था। इस कार्य में आने वाली कठिनाईयों में मुझे बड़े भाई सा संबल प्रदान किया। इनके सहयोग के लिए मैं हृदय से आभारी हूँ।

सर्वेक्षण -कार्य जो शोध प्रबंध को पूरा करने के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण होता है। मेरे मित्र श्री प्रसन्न शर्मा ने इस कष्ट - कारी कार्य में मेरा मनोबल हर समय बढ़ाया। उनके प्रिय सानिध्य की वजह से मैं अंततः लक्ष्य हासिल कर ही लिया। उनके प्रति आभार प्रकट करके मैं मित्रता को लघु नहीं करना चाहता।

जिले के मूलभूत जानकारी उपलब्ध कराने हेतु अधीक्षक, कार्यालय जिलाध्यक्ष रायगढ़ एवं अर्धाक्षक, कार्यालय जिलाध्यक्ष, जांजगीर -चांपा का अमूल्य सहयोग प्राप्त हुआ। जिनके सहयोग के बिना शोध से संबंधित आंकड़े ज्ञात करना संभव नहीं था। उक्त दोनों कार्यालयों के अधीक्षकों का हृदय से आभारी हूँ, जिनके सहयोग से शोध से संबंधित यथार्थ की जानकारी मुझे हो सकी।

विकास अधिकारी, एकीकृत सहकारी विकास परियोजना रायगढ़ ने हस्त करघा उद्योग से संबंधित जानकारी उदारतापूर्वक प्रदान की। उनके सहयोग के लिए मैं उनका आभार प्रकट करता हूँ।

बुनकर सहकारी समिति के विभिन्न प्रबंधकों, एवं हस्तकरघा उद्योग में कार्यरत बुनकरों ने इस उद्योग से संबंधित जमीनी हकीकत से अवगत कराया। सर्वेक्षण के दौरान इन बुनकरों से रूबरू होकर इनकी वास्तविक कठिनाईयों से परिचित हुआ। समाज और शासन के समक्ष इनके भविष्य को संवारने की महती जिम्मेदारी है, इस दिशा में मेरा इस मामूली प्रयास से यदि उनकी जिंदगी को संवारने में कुछ मदद हो सकेगी तो मुझे अतीव खुशी होगी।

श्री मृत्युंजय शर्मा एवं श्री आर. के. वैष्णव ने आंग्ल भाषा के विभिन्न पुस्तकों, पत्रिकाओं से शोध - प्रबंध से संबंधित अंशो को अनुदित करके शोध को पूरा करने में बहुमूल्य योगदान दिया है। पर जो अपने हैं उनका आभार प्रकट करने में संकोच हो रहा है।

श्री आर. एन. कुरूवंशी एवं श्री डी. आर. यादव ने इस शोध कार्य को आकार देने में अपना महत्वपूर्ण सहयोग दिया है। उनके टंकण कार्य के बिना ऐसा होना संभव नहीं होता।

इस शोध- प्रबंध को पूरा करने में मेरे माता, पिता व भैया का आशीर्वाद, मेरी पत्नि का सहयोग, प्रबंध को पूरा करने में मेरे ससुर जी का प्रोत्साहन को भुलाया नहीं जा सकता। उनके सहयोग हेतु कोटिशः धन्यवाद। नन्हीं बिटिया युक्ति जो मुझे इस श्रमसाध्य कार्य में मेरा मनोरंजन कर मुझे पुनः कार्य करने हेतु तरो-ताजा बना देती थी, उसे मेरा स्नेह।

दिनांकः 27.11.02

गिरीश शंकर वैष्णव